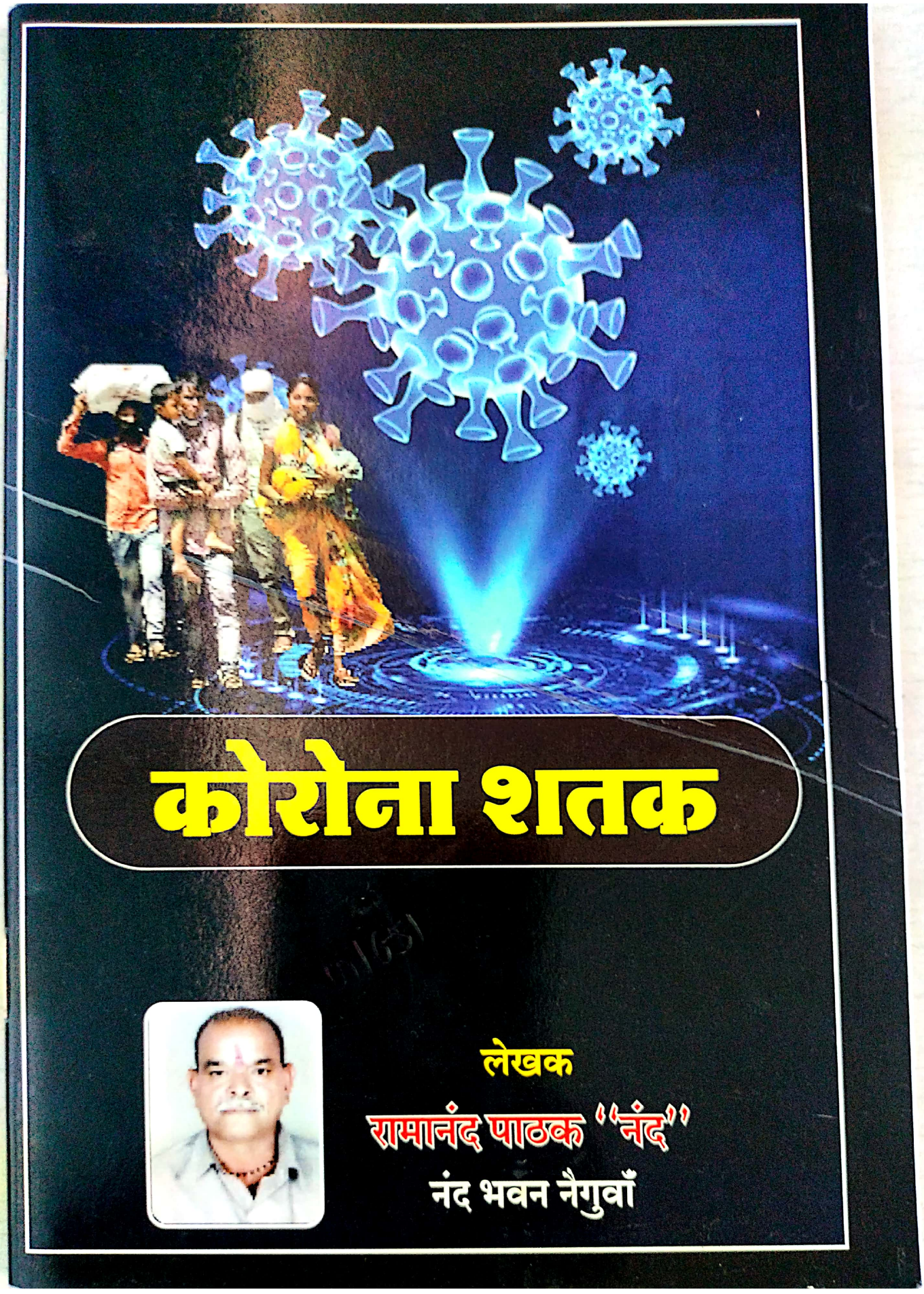

कोरोना शतक

लेखक

रामानंद पाठक "नंद"

नंद भवन नैगुवाँ

Scanned with OKEN Scanner

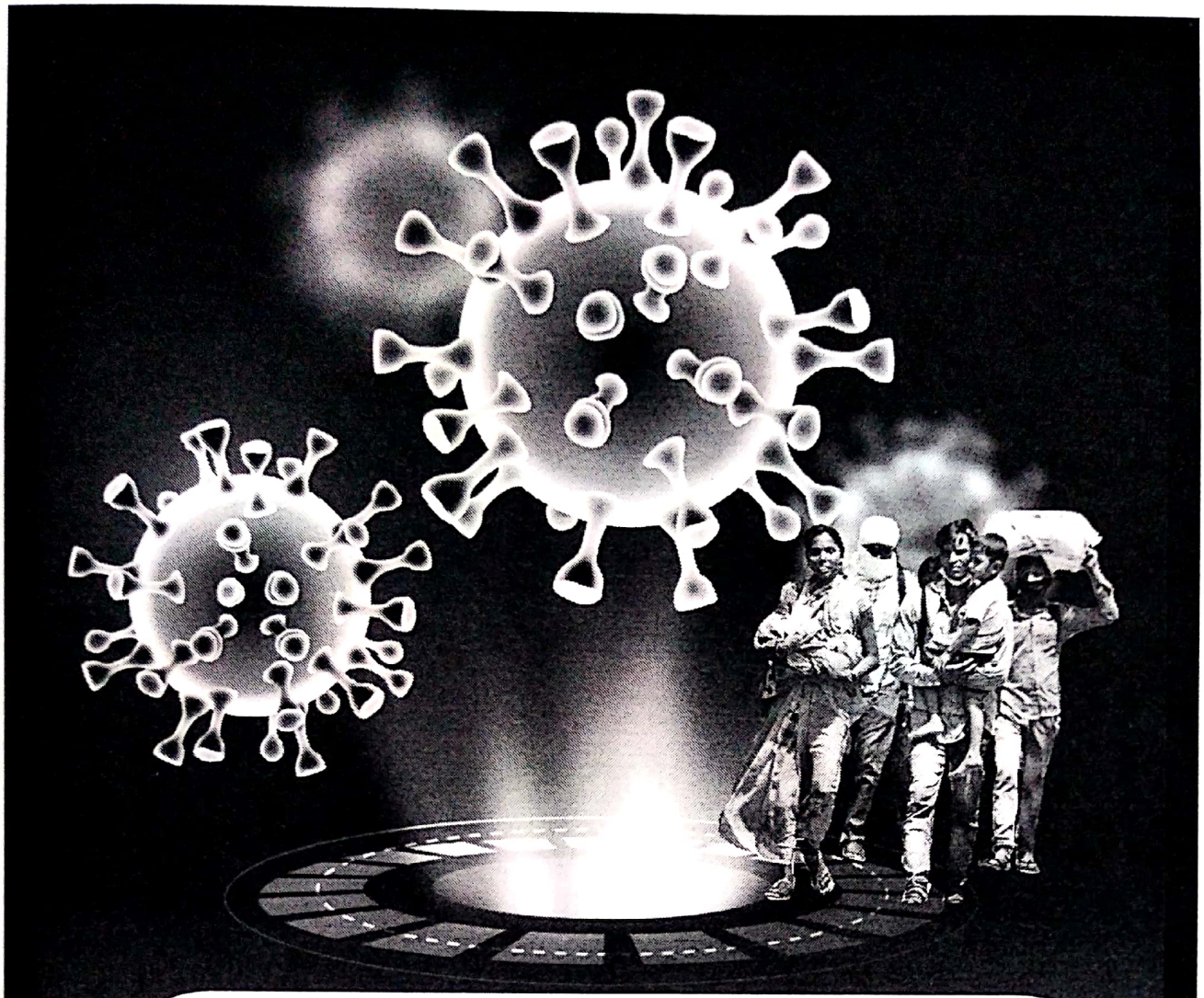

कोरोना शतक

C1651

लेखक
रामानंद पाठक "नंद"
नंद भवन नैगुवाँ

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. मनमोहन पाँण्डेय
सम्पादक बुन्देली

चण्डीजी वार्ड हटा
जिला दमोह(म.प्र.)
मो.नं.989397963

कवि समाज का संवेदन सील व्यक्तित्व होता है। सामाजिक छोटी से छोटी गतिविधि कवि के मानस को उद्वेलित करती है। कोरोना महामारी एक ऐसा नाम है, जिसको सुनकर विश्व का हर मानव भयभीत हो जाता है। लोक कवि श्री रामानंद पाठक ''नंद'' को इस महामारी ने गहरी अनूभूति दी, जिसकी अभिव्यक्ति उन्होंने शत चौकड़ियों के माध्यम से जन जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

बड़ौ बेशरम जौ कोरोना, औषध काउ मरौना।
धूप, ठंड, गर्मी, वर्षा कौ, ई पै असर परौना।

- (नंद)

भारतीय संस्कृति में गणेश जी को विघ्नहरण के रूप में स्मरण किया जाता है। नंद जी ने प्रथम गणेश की नाम वंदना की है।

आओ गणपति आसन धारौ, गणपति नाम तुम्हारौ।
कारज मोर समारौ आकें, मोर नमन स्वीकारौ ।।

- (नंद)

''कोरोना'' का परिचय देते हुए कवि कहते है-

रूप धरे कैउ महामारी, अब कौरोना बारी।
प्रथम आगमन ई धरती पै, चीन पै करी सवारी ।।

कौरोना की भयावहता से कवि का हृदय द्रवित हो उठता है-

लाशन के अंबार लगे है, मरगें हो रई क्षण-क्षण।
सावधान रव नाँय दोड़ रव, खबर राखियो सबजन ।।

-0- -0- -0- -0- -0-

बीमारन नंद गिनती बड़ रई, गणना नई हो पा रई।
ऊनें परे पलंग मशीनें, ओछीं पर-पर जा रई ।।

Scanned with OKEN Scanner